तर्ज : इक वो भी दिवाली थी इक यह भी दिवाली है.....

निरंकार से मिलाकर जीना हमें सिखाया,
बन पाएं आओ हम सब हरदेव जी की छाया.

छोटा बडा ना देखा बस प्यार ही किया,
बख्शे गुनाह सारे स्वीकार ही किया,
अपनाएं हम सभी को, हो प्रेम ही सरमाया,
बन पाएं आओ हम.....

भटके हुओं को खुद की पहचान मिल गई,
हरदेव जी से सबको मुस्कान मिल गई,
हर एक ने ही इनको अपने करीब पाया,
बन पांए.....

हर स्वास जिन्दगी का ही दान दे दिया,
भक्तों के लिए आपने बलिदान दे दिया,
उपकार ही किए और कभी भी ना जताया,
बन पाएं आओ हम.....

मानवता के मसीहा कमाल कर गए,
इस मिशन को जहाँ में बेमिसाल कर गए,
भूलें ना सबक 'दिलवर' सत्गुरू ने जो सिखाया,
बन पाएं आओ हम.....